International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588
www.newresearchjournal.com/multieducation
Volume 1; Issue 1; March 2016; Page No. 12-14

भारतीय लोक काव्य का स्वरूप

जयराम त्रिपाठी

सहायक प्रोफेसर, भारत रत्न, बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय, फतेहपुर।

सारांश
हिन्दी प्रदेश में मौखिक लोककाव्य लिखित लोककाव्य की अपेक्षा अधिक मात्रा में मिलता है। मौखिक लोक काव्य ऐसा लोककाव्य है जिसका रचनाकार आज्ञात होता है और गायक अपने ढंग से अपनी लय में गाता है। लोक काव्य पहले से चले आ रहे हैं जिनकों नये गायक अनुसरण करते हैं और मौखिक लोक काव्य लोक समाज में जीवित है। भोजपुरी के लोक साहित्य के संग्रह का श्री गणेश यूरोपीय विद्धानों ने किया, जिनमें अधिकांश इस देश में सिविल सर्विस में होकर आए थे। ऐसे विद्वानों मे सर चार्ज ग्रियर्सन का नाम मुख्य हैं जिन्होंने आज से 80 वर्ष पूर्व भोजपुरी लोकगीतों के संकलन का कार्य प्रारम्भ किया था।

मूल शब्दः हिन्दी प्रदेश, भोजपुरी, लोकगीत

प्रस्तावना

डा0 कृष्णदेव उपाध्याय ने भोजपुरी लोकगीत भाग और भोजपुरी ग्राम गीत भाग 2 पुस्तकें छपवायी जिनमें भोजपुरी गीतों का संकलन है। भोजपुरी लोकगीत भाग। में सोहर, खेलवाना, जनेऊ, विवाह, परिहाल, गवना, जॉत, छठी माता, शीतला माता, झूमर, बारहमासा, कजली चेता, बिरहा, भजन आदि 15 प्रकार के 27 गीतों का संकलन है। भोजपुरी ग्रामगीत भाग–2 पुस्तक में सोहर जोग, सेहला, विवाह, बहुरा, दिडिया, गोधन, नामपंचमी, जातासार, झूमर कजली, बारहमासा, होली, डफ, चैता, सोहनी, रोपनी, बिरहा, कहॅरऊ, गोंडगीत, पचरा, निर्गुन, देशभक्ति पूर्वी पाराती और भजन इन पच्चीस प्रकार के 430 गीतों का संकलन है।

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ ने शक संवत् 1881 में उत्तर प्रदेश के लोकगीत पुस्तक छपवायी जिसमें मौखिक लोकगीत संकलन किए गए हैं। भोजपुरी लोकगीत के संकलनकर्ता डा0 उदय नारायण तिवारी श्री राम विचार पाडेय, श्री विद्या निवास मिश्र हैं। अवधी के लोकगीत के संकलनकर्ता श्री श्रीकृष्ण दास, श्री रूप नारायण त्रिपाठी तथा श्री सत्यव्रत अवस्थी हैं। ब्रज के लोकगीत के संकलनकर्ता श्री कृष्णकर्ता श्री कृष्णदत्त बाजपेयी हैं। बुंदेली लोकगीत के संकलनकर्ता श्री कृष्णानन्द गुप्त हैं गढ़वाली लोकगीत के संकलनकर्ता श्री गोबिन्द चातक हैं। कुमॉयुनी लोकगीत के संकलनकर्ता श्री मोहनचन्द्र उप्रेती, श्री दुर्गादत्त पन्त तथा श्री नित्यानंद पाण्डेय हैं।

मौखिक लोककाव्य में प्रेमकथात्मक गाथाएॅ, वीर कथात्मक गाथाएं एवं रोमांचक कथात्मक कथाएं प्रचलित हैं। इन गाथाओं को गवैये जनता के मनोरंजन तथा ज्ञान वर्धन के लिए गाते हैं। काव्य पाठ मौखिक चलता है। आल्हा मौखिक रूप से अत्याधिक प्रचलित हैं। गवैये को उसमें इतना जोश आता है कि वह बिना रूके आल्हा गाता चला जाता है। लोकरी, सोरठी मौखिक काव्य हैं। भोजपुरी भाषा में बिहुला विषधरी का मौखिक काव्य प्रसिद्ध है। गोपीचन्द्र की गाथा काव्य में प्रचलित है। भरभरी, विजयमल, राजा ढोलन, नयकवा वनजारा, चनैनी इत्यादि मौखिक लोक काव्य भोजपुरी क्षेत्रों में अब भी गाये जाते है। अवधी बोली में पॅवाड़ा तथा लोकगीत मौखिक रूप से प्रचलित हैं। लोक साहित्य में पॅवाडा ही गीतों का वह रूप है जिसमें किसी घटना का सम्पूर्ण वर्णन मिलता है। लोकगीत में तो कथानक का सम्पूर्ण विकास नहीं होता अवधी क्षेत्र में तात्क्षिक दृष्टि से पॅवाड़ मिलते हैं, उनमें श्रवण, शिव पार्वती, भरथरी, चंद्रावली, कुसुमा आदि के चरित्र चित्रित हुए हैं।

लोकगीत की श्रेणी में ऋतु सम्बन्धी गीत, जाति संबंधी गीत, श्रमगीत, प्रेमगीत, पर्वगीत, बालगीत इत्यादि मुख्य रूप से प्रचलित हैं। बघेली–बोली में नकहाइ केर जुज्झ पवॉड़ा प्रसिद्ध है। बुंदेली बोली में जगदेव पॅवाड़ा, ब्रज में रॉना, जाहरपीर, कनउजी बोली में आल्हा, उभदेव का गौना, तथा घन्नइया पॅवाड़ा, राजस्थानी लोक साहित्य में पाबू जी पंवाड़, नानहिए का पावाड़ा, मणादे, पॉवाड़ा, सीकरी के टूणसिंह, निहादले ताड़ा मालवी बोली में भरथरी पवाड़ा, नर सिंह गढ़ के वेन सिंह, धारगएी पॅवाड़ा कोरवी बोली में ढोला फवाड़ा गुजरी का पॅवाडाजगदेव पॅवार का पॅवाड़ा इत्यादि मौखिक रूप से गाये जाते हैं।

गढ़वाली बोली में राजकुमारी सुरकेश का पॅवाड़ा अत्याधिक प्रसिद्ध है। वास्तव में गढ़वाल में दो तरह के पॅवाड़े उपलब्ध होतें है। एक प्रकार के पॅवाड़े वे हैं जिनमें युद्धों का वर्णन आता है, किन्तु इनसे भी भिन्न दूसरी कोटि के पॅवाड़े वे हैं जो वीरों के जीवन से सम्बद्ध अवश्य है, किन्तु वीरता अथवा युद्ध उनका वर्ण्य विषय नहीं है। उनके नायक भड़ अवश्यक है, किन्तु उनकी गाथा में वीरता सूचक प्रसंग नहीं मिलते। ऐसे पॅवाड़ो में मुख्यतः प्रणय को महत्व मिलता है। कालू भंडारी, जीतू बगडवाल, मालू राजुला, नरू विजोला हरिचंद्र आदि ऐसे ही पॅवाड़े हैं। कुमाउँनी बोली मैं राजा जगदेव पॅवार और राजा प्रीतमदेव के फॅवाड़े लोकप्रसिद्ध हैं। इनके पॅवाड़ो में वीरगाथा को भड़ो तथा गाथा के नायक के पैगे कहा जाता है। कुलुई बोली मे अन्य बोलियों के पॅवाड़े के नायकों की तरह वाला पॅवाड़ा नहीं मिलता है। परन्तु नेगी दयारी के गीत में दो राजाओं कुल्लू तथा नाहन सिरमौर की आपसी कश–मकश तथा फलस्वरूप नाहन के राजा के कुल्लू के राजा को छूत निमंत्रण का उल्लेख है जिससे वह कुल्लू के राजा को जुएं में परास्त कर उसके राज्य को हड़प सके। लेकिन, कुल्लू नरेश के बुद्धिमान मंत्री नेगी दयारी ने उसकी रक्षा की।

इस तरह एक हलका लघु पॅवाड़ा मौखिक रूप से कुलुई बोली में प्रचलित है। पॅवाडों के अतिरिक्त प्रत्येक हिन्दी बोलियों में लोकगीतों का प्रचलन है। सामाजिक, धार्मिक, पार्विक लोकगीत अधिकांश मिलते हैं। समाज में जो संस्कार है उनके प्रति मौखिक लोकगीत विभिन्न अवसरों पर गाये जाते हैं। देवी–देवताओं तथा ग्रामीण स्थलों में वास करने वाले भूत प्रेतों के प्रति अनेक मौखिक लोकगीत

विभिन्न बोलियों में पाये जाते हैं श्रमगीत तथा ऋतुगीत भी समयानुसार गाये जाते है। जातीय गीतों में अलग–अलग प्रकार के लोकगीत कारसदेव की पूजा में गाते हैं परन्तु गाटगीत अन्य जातियों को नहीं देते है।

हिन्दी लोककाव्य को पॉच भागों में विभक्त किया गया है – लोकगीत, लोकगाथा, लोक कथा, लोक नाट्य और लोक सुभाषित।

लोकगीत – लोकगीत विभिन्न ऋतुओं में तथा विभिन्न संस्कारों के अवसर पर गाए जो हैं कुछ ऐसी जातियां भी हैं जिनमें गीत विशेष को गाने की प्रथा है। विभिन्न कार्य करते समय परिश्रमजन्य थकावट दूर करने के लिए भी कुछ गीत गाए जाते हैं, इस प्रकार लोकगीतों का श्रेणी विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(क) संस्कारों की दृष्टि से
(ख) रसानुभूति की प्रणाली से
(ग) ऋतुओं तथा व्रतों के क्रम से
(घ) विभिन्न जातियों के अनुसार तथा
(ड.) श्रम के आधार पर।[1]

संस्कार सम्बन्धी लोकगीत – हिन्दू धर्म विभिन्न संस्कारो से बना हुआ है। संस्कार ही इस धर्म के ताने बाने हैं। जन्म के पूर्व से लेकर मृत्योंपरान्त संस्कार पीछा नहीं छोड़े हैं। प्रत्येक संस्कार के प्रति लोकगीत समाज में इस तरह व्याप्त है कि उन्हें संस्कार अवसरों पर पुरूष या महिलायें अवश्य गाती हैं। अतः संस्कार सम्बन्धी लोकगीत निम्नलिखित हैं। गर्भाधार, पुंसवन, पुत्र जन्म, मुंडन, कणछिदन, यज्ञोपवीत, विवाह गौना और मृत्यु।

रसानुभूति सम्बन्धी लोकगीत – ऐसे लोकगीत जिनमें रसों का सागर भर दिया गया है। अधिकांशतः ऐसे लोकगीतों में करूण वीर, हास्य, श्रृंगार एवं शांत रसों की अभिवृद्धि रहती है। संस्कार सम्बन्धी लोकगीतों में ही रसानुभूति लोकगीतों का समन्वय पाया गया है। अतएव इन रसानुभूति सम्बन्धी लोकगीतों को अलग लोकगीत नहीं माना जा सकता है। प्रेमगीत भी इसी श्रेणी में व्याप्त है। पंजाब की सुप्रसिद्ध प्रेमगाथाएं, राजस्थानी लोकगाथा ढोला मारूरा दूहा, सोहनी और महीवाल, एवं हीरा–रांझा में संभोग श्रृंगार की मधुर झाँकी देखने को मिलती है।

श्रृतु सम्बन्धी लोकगीत – भारत में ऋतुओं का परिवर्तन और महत्व प्रारम्भ से ही लोक समाज के लिए उपयोगी रहा है। अतएव यहाँ ऋतृ सम्बन्धी गीत अत्याधिक प्रचलित है। वर्षा, जाड़ा, ग्रीष्म ऋतुओं में अनेक मौसम अपना नया वातावरण प्रस्तुत करते हैं अतः विभिन्न मौसमों के साथ विभिन्न लोकगीतों ने जनकंठों से जन्म लिया है। ये लोकगीत निम्न लिखित प्रकार के हैं –कजरी, हिडोला, होली, चैता, बारहमासा, राछरा।

व्रत सम्बन्धी लोकगीत – हिन्दी बोलियों के क्षेत्रों में अनेक तरह की पूजायें प्रचलित हैं। कई छोटे–बड़े पर्व हैं। इन प्रजाओं तथा पर्वो में लोकगीत गायें जाते हैं। इनके पकार – नागपंचमी, बहुरा, छठी माता, भइया दूज, रक्षा बंधन, माता मइया, गोधन, चिड़िया, नवरात गीत, गौरा के गीत, भोजली गीत, कारसदेव गीत और गोट।

जाति सम्बन्धी लोकगीत – हिन्दी प्रदेश में अनेक जातियाँ रहती हैं जिनके गीत भी अपनी–अपनी जातीय शैली में प्रचलित हैं। एक जाति के लोग दूसरी जाति के जाति विशष परक गीतों को नही गाती हैं। अहीरों के गीत, मल्लाहों के गीत, गोंडों के गीत, चमारों के गीत, धोबियों के गीत, कहारों के गीत तेलियों के गीत, गड़रियों के गीत,धानुकों के गीत, आरखो के गीत और कुर्मियों के गीत।

श्रम सम्बन्धी लोकगीत – समाज में श्रम ही श्रम है। वस्त्र निर्माण से कृषि कार्यो तक मानव श्रमहीन नहीं है। तेल निकालना, सूत कातना, हल चलाना, धान लगाना, फसल काटना, मकई रखाना, रोपाई बिनवारी, गेंहू माड़ना जैसे अनेक कार्य हैं जिनके, प्रति लोकगीत भी प्रचलित हैं। रोपनी के गीत, सोहनी के गीत, चरखा के गीत, गेंहू मडाई के गीत, जोत के गीत और कोल्हू के गीत।

विविध लोकगीत – कुछ लोकगीत अपना स्थान अन्य लोकगीतों की अपेक्षा अलग रखते हैं एसे लोकगीतों में भक्ति भाव पाया जाता है। कबीर दास के निर्गुन पद तथा सूरदास के सगुण पद उल्लेखनीय हैं। भजन, कीर्तन तथा हास्य मनोरजनात्मक गीत अपनी पहचान अलग दशार्ते हैं। विविध लोकगीत मुख्यतः इस प्रकार है – झूमर, पूरबी, भजन, कीर्तन, अलचारी, पालना, निर्गुन, सगुण और खेल।

लोकगाथा – लोकगाथा काव्यों में वीर नायकों, वीर नायिकाओं की वीरता पूर्ण कहानी को गवैये गाते हैं हिन्दी बोलियों में क्षेत्रानुसार अनेक राजाओं की प्रशंसा लोकगाथा काव्यों द्वारा की गई है। उत्तर प्रदेश में आला जो अत्याधिक ऐतिहासिक वीर पुरूष माना जाता है। उसकी वीरता की गाथाओं को वीरगाथा काल में ही आल्हा काव्य रचा जाने लगा था। आगे चलकर आल्हा छन्द बन गया। नये कवियों ने आल्हा नामक की जीवन कहानियों पर कई लोक काव्य पुस्तके लिखी हैं। ये गाथायें इतनी लम्बी होती हैं कि गवैये कई–कई रात तक इन्हें गातें गातें रहते हैं। यदि इनको साधारण जनता का महाकाव्य कहा जाये तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

लोककथा – लोककाव्य कथायें भी प्रचलित हैं। माताएं अपने बच्चों को गबरूप में लोककथा सुनाती हैं परन्तु उसमें जगह जगह काव्य का मिश्रण कर देती हैं जिससे लोककथा अत्यधिक रसपूर्ण तथा मनोंरजक बन जाती है। भोजपुरी बोली वाले क्षेत्र में लड़कियाँ पिड़िया का व्रत करती हैं और लगभग सम्पूर्ण महीने तक पिड़िया लोककथा को संध्याकाल में सुनती है। इसी तरह सत्य नारायण की कथा प्रचलित है। इन कथाओं के अतिरिक्त अनेक जातक कथायें भी प्रचलित हैं बहुत से वृद्ध व्यक्ति जाड़े के दिनों में आग के पास बैठकर लोगों को काव्यात्मक ढंग से लोककथायें गद्य पद्य मिश्रित भाषा में सुनाते है।

लोक नाट्य – लोक नाट्य में गीत, संगीत नृत्य तीनों जब मिल जातें हैं तब लोक समाज के लिए आनन्द अन्य स्थान पर ढूढने की आवश्यकता नहीं। लोक नाट्य में लोकभाषा का प्रयोग होने से दर्शकों को समझने तथा आनन्द पाने में तनिक भी बाधा नही जाती है। नौटंकी, कृष्ण रासलीला, रामलीला तथा अन्य प्रेम कहानियों के नाटक बहुत प्रसिद्ध हैं। बिहार तथा उत्तर प्रदेश में पूर्वी जिलों में विदेसिया नाटक भिखारी ठाकुर रचित आज भी लोगों के हृदयों को जीत लेता है। कुमायू तथा गढवाल में झोड़ा, चचरी, छपेली, छोलिया आदि अनेक लोकनृत्य प्रसिद्ध है।

लोक सुभाषित – समाज को नीति परक ज्ञान देने के लिए दोहे, चौपाइयाँ, कहावतें, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ, मुहावरे तथा पहेलियाँ गद्य पद्य दोनों रूपों में प्राप्त है। घाघ और भड्डारी की महावतों में ऋतु संबंधी नीतियाँ का वर्ण मिलता है। खेती, पशु, मौसम के प्रति उनकी छोटी छोटी पद्यत्क रचनायें सभी को भाती हैं।

मातायें अपने बच्चों का मन बहलाने के लिए नीति परक काव्य सुनाती हैं। बच्चे को सुलाने के लिए लोरी गाती हैं। बच्चे तरह तरह के खेल खेलते हैं खेलों में वे गाते भी है। अतः ये लोक सुभाषित गीत या कतिवतायें आज भी आधुनिक लोक समाज में प्रचलित हैं। हिन्दी प्रदेश के क्षेत्रों में लोकगीतों की सांस्कृतिक भूमि बहुत पुरानी है। समय करवटें लेता गया है और समाज के अन्दर भौतिकवाद ने अपना पड़ाव डाल दिया है। फिर भी लोग साहित्य ने अभी अपना दम नहीं तोडा है। विभिन्न बोलियों का लोक साहित्य नया बाना धारण करने में सिकुड़ रहा है। फिर खडी बोली हिन्दी में लोक साहित्य का सृजन किया जाने लगा है। जब लोक बोलियों का साहित्य तत्सम शब्दों में ढाला जाने लगता है तब वह सिर्फ साहित्य की चादर में लिपट कर सिकुड़ जाता है क्योंकि तत्सम शब्द धारक साहित्य लोक साहित्य से भिन्न व बनावटी है। वर्तमान

में भी नृत्य, तमाशों और खेलकूदों की कमी आ गयी हो परन्तु संस्कारों के प्रति लोककाव्य पूर्व की तरह जीवित है। नयी पीढ़ी को चाहिए कि अपनी बोली के प्रचीन गीतों को जीवित एवं प्रचलित बनाये रखे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. महापंडित राहुल, सांस्कृत्यायन, हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, षोड़श भाग, प्रस्ताव नं 7
2. महापंडित राहुल, सास्ंकृत्यायन, हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, षोड़श भाग–प्रस्तावना
3. महापंडित राहुल, सांकृत्यायन, इतिहास सोडश भाग 12